78. Ishwariya Maryadayen & Pavitrata - 10-06-2013

ओम शांति,

अच्छी चल रही है भट्ठी सब की ? हमारे कब से संकल्प थे की मधुबन में भट्ठीयाँ चले। खाली रहता था ना । पहले टीचर्स बहेनो का होता था उनका भी निचे गया तो खाली रहता था। तो इस पवित्र भूमि का सबको बहोत फायदा हो, सब चार्ज हो कर जाते है यहाँ से। मुझे याद आ रहा था आते हुए - बाबा ने कभी यहाँ हमें कहा है **जिस दिन मधुबन व्यर्थ से मुक्त हो जायेगा यह स्थान जादू की नगरी बन जायेगा।** हजारो लोग देखने आते है रोज। इस धरती पर आते ही दिव्यता हो जाएगी। उन्हें समज में ही नहीं आएगा क्या हो गया यहाँ पे आते ही। तो व्यर्थ को समाप्त करने की लिए बहोत सुंदर है यहाँ भट्ठी चलना। इससे व्यर्थ भी समाप्त हो जाते है और अच्छे वाइब्रेशन्स भी फ़ैल जाते है। आप सब भाग्यवान है, नहीं तो सब भाई बहेने यहाँ पे रहने के लिए तरसते ही रहते है।

संसार में दो शक्तियां ही सबसे बड़ी है चारो युगों में **एक पवित्रता का बल और दूसरा योग का बल ।** पवित्रता केवल एक धारणा नहीं यह बहोत बड़ा बल भी है । और यह बल उसके लिए बल बन जाता है यह बड़ी सूक्ष्म बात है पवित्र तो बहोत बाबा के बच्चे बन गए है लेकिन कुछ के लिए पवित्रता बल बन गया है, कुछ के लिए यह धारणा रह गया है, कुछ के लिए यह संघर्ष है, कुछ के लिए यह आनंद है । **पवित्रता बल उसके लिए होता है जो अपने मन को साधारण और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त कर के स्वमान में स्थित हो जाते है ।** तो यह बल प्रकृति को पावन करने वाला होता है ।

में आपको इसके बारें में पांच प्रैक्टिकल बातें रखूँगा आपके सामने जिनको सभी को करना है क्यूंकि पवित्रता की यात्रा बहोत लम्बी यात्रा है, बहोत सूक्ष्म यात्रा है । इतनी लम्बी है की जो सम्पूर्ण पवित्र बन गए वोह है अस्ट रतन । उनकी सम्पूर्ण पवित्रता के लिए दूसरा शब्द है संपूर्ण निर्विकारी । निर्विकारी बहोत सुंदर है पवित्रता के लिए । जो बहोत पवित्र बन गए, जिनका युद्ध समाप्त हो गया वोह है विजयी रतन बाकि १००। इतनी बड़ी सब्जेक्ट है यह हमारी। लोगो ने तो मान लिया था की कलयुग में पवित्र बनना, सम्पूर्ण पवित्र बनना तो असंभव है। लेकिन बाबा ने इसको संभव किया कैसे? क्या सिखाकर? राजयोग सिखाकर। **बिना योग बल के पवित्रता का बल आता नहीं है।**

अब मुझे पहली बात याद आ रही है ८२ की मुरली की। क्यूंकि मेने उन दिनों अपनी प्यूरिटी को परफेक्ट करने के लिए एक साल का प्रोग्राम बनाया था। हर हफ्ते एक विशेष बात का अभ्यास करने का था। तो मुझे याद है बाबा ने एक बहोत अच्छी बात कहीं मुझे ऐसा लगता था जैसे बाबा मेरे को कह रहा है इसी हॉल में - **तुम सोचते हो मुझे संपूर्ण पवित्र बनना है पर नहीं तुम यह सोचो में परम पवित्र आत्मा हूँ।** पहली बार सुना था ध्यान से शायद पहले भी बाबा ने कहा हो बहोत अंदर गयी यह बात में परम पवित्र आत्मा हूँ। बहोत अच्छा अभ्यास हुआ इस पर अब में इसका कुछ विस्तार आपको कहता हूँ ।

देखिये हमारे संकल्पों में बहोत बड़ी शक्ति है। अगर कोई मान ले की ग्रहस्त में रहते तो सम्पूर्ण पवित्रता संभव नहीं कभी क्रोध आएगा, कभी अहम् टकराएगा, कभी लड़ाई हो जाती है, इच्छाएं हो जाती है प्रवृति में रहते यह बात पूरी संभव नहीं किसी हद तक जा सकते है हम। अगर हम यह संकल्प रखते है तो वैसा ही होगा। बहोत अच्छी बात सभी अपने मन में समा ले - **जिस संकल्प को हम स्वीकार कर लेंगे वही हमारी स्थिति बन जाएगी, वही हमारा जीवन बन जायेगा।** इसलिए दो संकल्प सभी को स्वीकार करने है में परम पवित्र आत्मा हूँ और में विजयी रतन हूँ। उसके विस्तार में हम चलेंगे - में परम पवित्र आत्मा हूँ जैसे ही हम यह सोचते है तो क्या होता है? आत्मा से पवित्र किरणे निकल कर, सफ़ेद किरणे, हमारे पुरे ब्रेन में फैलती है और फिर देह में फैलती है । इससे अंग अंग शीतल होने लगता है। याद हो बाबा की बात आपको, मुरली में आ चुकी है, साकार मुरली में - **जब तुम्हारे अंग अंग शीतल हो जायें तो तुम कहाँ तक पहोंच गयें? याद नहीं होंगी आपको तुम पहोंच गए त्रेता-युग में।** यानी पवित्रता की सतो स्थिति आ गयी अभी सतोप्रधान बाकि है उसके बाद भी। तो बहोत ऊँची स्थिति है।

एक अभ्यास सभी करेंगे - में परम पवित्र आत्मा हूँ। में इसके पहले पवित्रता के बारे में इसका महत्व क्या है वोह आपके सामने रख दूँ - बहोत सूक्ष्म बात है अपवित्रता के कारण ही जीवन में विघन आयेंगे। विघन आ रहे है अपनी प्यूरिटी को थिक कर ले विघन नष्ट हो जायेंगे। बहोत अच्छा अनुभव करना है सब को। पवित्रता विघ्नों को नष्ट करने वाली शक्ति है।

दूसरी बात जो बहोत बड़ी बात है पवित्रता से प्रकृति पावन बनेगी। संसार में कोई वैज्ञानिक इस बात को नहीं जानता की यह जो प्रकृति दूषित हो गयी है इसको थिक कैसे किया जाये ? हमारी पवित्रता ही प्रकृति को पावन करेगी, और जब प्रकृति पावन हो जाती है तो यह भारत भूमि को भरपूर कर देती है। यह धरती सोने, हीरे से भरपूर हो जाएगी, प्यूरिटी धन सम्पति को आकर्षित करती है। जहाँ प्यूरिटी है वहीं पीस एंड प्रोस्पेरिटी है जो इंग्लिश जानते है धन सम्पदा है वह समृद्धि है। तो पवित्रता की बहोत बड़ी आवश्यकता इस समय है प्रकृति को। संसार हमें बदलना है प्रकृति भी उसमें बदलनी है इसलिए बाबा हमे कहते है तुम प्रकृति के मालिक हो। **तुम्हारे पवित्र वाइब्रेशन्स से ही प्रकृति पावन बनती है, सतोप्रधान बनती है इसलिए हम इसके मालिक है।**

इसीलिए माताएं बहोत बैठी है माताओ को एक काम करना है पहले भी सिखाया होगा भट्ठी में और आप सब ने सुना होगा क्लासेज में भी भोजन बनाते हुए अभ्यास करना है में परम पवित्र आत्मा हूँ। कौन कौन करती है माताएं? बहोत अच्छा और बढ़ा देना। बिलकुल आप विश्वास पूर्वक जान ले - आपने अभ्यास शुरू किया में परम पवित्र आत्मा हूँ आपके नैनो, से हाथो से, प्योर वाइब्रेशन्स भोजन में भरने लगे। दोनों फायदे होंगे आपके घर में पवित्र वाइब्रेशन्स फैलने लगेंगे और भोजन में समायेंगे। जो उसे खायेगा उसका चित्त शुद्ध होगा, उसके रोग समाप्त होंगे। पवित्रता सबसे बड़ी औसधि भी है। तो माताओं को जो नहीं कर रही उन सब को करना है। भाइयों में से कोई भोजन बनाते है? एक बनाते है। खाते समय और खाने से पहले सात बार भोजन को दृष्टी देकर, सात बार, में परम पवित्र आत्मा हूँ। तो आपके नैनो से प्योर वाइब्रेशन्स भोजन में चले जायेंगे फिर आप खाना।

देखो भोजन खाने की बहोत अच्छी विधि आप सब अपनाएंगे माताएं भी भोजन खाते हुए यह करेंगी भोजन को दृष्टी देके यह संकल्प करें - **प्रकृति को धन्यवाद दो तुमने यह हमें यह सुंदर भोजन दिया बहोत बहोत थैंक्स।** तीसरा इस भोजन को बाबा को अर्पित कर दो फिर खाओ। लेकिन **बाबा को पवित्र भोजन ही अर्पित किया जा सकता है।** कल मुरली में आ गया था बाबा जो परम सत्य है वोह केवल सत्य को ही स्वीकार करता है उसके लिए पवित्रता ही सबसे बड़ी सत्यता है।

तो यह काम सबको करना है। इस भोजन को खाने से आपके घर का कल्याण होंगा, क्रोध समाप्त होंगा सबका, चित्त शांत होंगा, विचार महान बनेंगे, बच्चो के चरित्र में वृद्धि होंगी, बच्चे चरित्रवान बन जायेगे। माताओ को अपने को बहोत जिम्मेदार समझते हुए यह काम करना है।

तो एक अभ्यास हुआ में परम पवित्र आत्मा हूँ। प्रॅक्टिकली क्या करेंगे सभी - कुछ नियम बना दे भट्ठी से सवेरे उठते ही सात बार गुड फिलिंग सहित गुड फिलिंग माना स्वीकार करते हुए **अपने को आत्मा देखो और सात बार संकल्प करना में आत्मा परम पवित्र हूँ।** प्यूरिटी बढ़ने लगेगी, आपके मन में चलने वाला युद्ध समाप्त हो जायेगा, पसंद है?

भोजन का दूसरा अभ्यास - भाई लोगो को कहीं ना कहीं रिश्तेदारियों में जा कर भोजन करना ही पड़ता है। आप बताएँगे नहीं बहेनो को नहीं तो कहेंगी क्यूँ खाया? कुछ रिलेशनशिप ऐसे होते है जिसमें खाना ही पड़ता है। यह विधि आप अपनाना इमर्जेन्सी में येही वोह विधि है जिसको बाबा कहते है - **तुम योग बल से संसार को पावन करते हों क्या भोजन को पावन नहीं कर सकते?** भोजन को पावन करना। वैसे भी आज कल जो भोजन आ रहा है बाजार से भी वोह दूषित आ रहा है संसार में सारी बीमारियाँ भोजन से बढ़ रही है। कुछ टावर से, टावर लगे हुए है ना? मोबाइल के टीवी के और कुछ भोजन से। भोजन में ऐसी ऐसी चीजे डाली जा रही है आम को ऐसे ऐसे साधनों से पकाया जा रहा है। उनमें बहोत अशुद्धि है, उससे बीमारियाँ होती है इसलिए माताओं को सब्जी और भोजन गरम पानी से धोना चाहिए। अच्छे गरम पानी से उसमें कुछ भी ऐसा वैसा चिपका रह गया हो वोह नष्ट हो जाये और बाकि जो अंदर चला जाता है? अब देखो मानलो बैगन की खेती पे छिडकाव किया बैंगन के उपर भी पड़ा तो अंदर जायेगा या नहीं? अंदर समाएगा कुछ न कुछ तो आप उसे दृष्टी देते हुए में परम पवित्र आत्मा हूँ यह अभ्यास करेंगे तो अंदर की उसकी सारी इम्पुरिटी समाप्त हो जाएगी और यह अभ्यास अपनी प्यूरिटी को भी बहोत महान बनाएगा।

तीसरी बात में विजयी रतन हूँ। सोच के देखेंगे सभी। यह संसार का चक्र कितनी बार घूम चूका है? आज भी था कितनी बार घुमा है? अनंत बार। गिनती ही नहीं उसमे से हम दस हज़ार ले ले जिसकी गिनती ही नहीं उसमे से हम दस हज़ार बार लेते है। आप सोच के ही देखो दस हज़ार बार यह चक्र घूम गया है। हम यहाँ बैठे है कितनी बार? दस हज़ार बार। बापू नगर में अपने घर में कितनी बार रहे है आप? आप को कोई कहे डेल्ही घूम के आओ आप गाइड लेंगे भाई डेल्ही घुमा दो। दूसरी बार जायेंगे तो कहेंगे हमने तो देख ही लिया है चलो फिर भी गाइड ले लिया। आज

कल बसे चलती है, थ्री व्हीलर चलते है, पूरी डेल्ही घुमा देंगे चलो पाच बार घूम आये। अब आप घुमने गए तो कैसा लगेगा? सब कुछ तो देखा हुआ है। कुतुम्बमीनार देखेंगे तो यह तो देखि हुयी है, होगा ना ऐसे? रास्ते में भटकने की कोई संभावना नहीं रहेगी हम तो यहाँ दसो बार आये है। हमें पता है रास्ता भूल भी गए तो यह बस में बैठ के फिर पहोंच जायेंगे। सोचो हम दस हज़ार बार माया को जित चुके है, जीती है या नहीं? या कहेंगे हमने थोड़ेही जीती थी थोड़ो ने जीती थी। क्या कहेंगे भाई लोग? हमने ही जीती थी हमने माया को दस हज़ार बार जीता है अब भी जित हमारी ही है। **जित के नशे के साथ आगे बढ़ेंगे तो विजयी रतन बन जायेंगे।** यह सूक्ष्म बात है, जित का नशा । इस माया को तो बार बार जीता है।

दो पहेलवान लड़ते हो एक पहेलवान बड़ा पावरफुल हो दुसरे को हरा देता हो। दो चार बार के बाद वोह कैसे लडेगा? खेल की तरह अरे इसको तो अब हराया अब गिराया। हमने भी माया को हराया है। यह नशा ले लो आप। तो सवेरे उठ कर में विजयी रतन हूँ ।

तीसरा भी स्वमान ले लेना में मास्टर सर्व-शक्तिवान हूँ, इससे विजयी बनने की शक्ति जग जाएगी। कल्प पहले जो हमने माया को जीता था वोह विजय की शक्ति हमारे पास अभी भी है वोह काम नहीं कर रही है सो गयी है वोह इस संकल्प से जगेगी। में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ विजयी रतन हूँ, थिक है पसंद है? अगर आप इस अभ्यास को बहोत बढ़ाएंगे तो नए नए अनुभव होंगे। बहोत कम पुरुषार्थी इस पे काम करते है बहोत कम सायद हज़ार में से एक दो । में विजयी रतन हूँ, इसको बहोत अच्छी तरह आप को अपने फीलिंग्स में लाना है । विजय मेरी ही है, माया चाहे कितनी भी प्रबल हों, लेकिन में? माया से भी अधिक पावरफुल हूँ, विजयी हूँ। इश नशे को रोज सवेरे अपने को देना है। सवेरे अपने को चार्ज करेंगे यह चार्जिंग है। जैसे मोबाइल को चार्ज करने का ध्यान रखते है ना? अपने को भी चार्ज करना है रोज, पसंद है माताओ को?

एक और काम करना है सभी को प्यूरिटी को बहोत बढ़ाने के लिए । यह शरीर हमको प्रकृति से मिला है, प्रकृति ने पांच हज़ार साल तक हमारी पालना की है, की है ना? सब कुछ दिया देह भी दिया, खाना, पीना, हवा देखो प्रकृति की हमें कितनी अच्छी देन है। अगर प्रकृति हमें कह दे में तुम्हारी हवा एक मिनट के लिए बंध कर देती हूँ क्या होगा हमें ? कोई भी यहाँ बचेगा नहीं। एक मिनट तक जिन्दा रहना लगभग किसीके बस का नहीं है । तुरंत परमधाम पहोंच जायेंगे और हमें पता भी नहीं है की प्रकृति ने हमें इतनी अच्छी चीज जीने के लिए दी हुयी है। हम श्वास ले रहे है बड़े आराम से हमें उसका पता भी नहीं है। प्रकृति ने हमें बहोत कुछ दिया है, प्रकृति को हम रिटर्न करेंगे, इसलिए रोज दस मिनट सवेरे, साम कभी भी प्रकृति को पवित्र वाइब्रेशन्स देने है। में उसकी एक बहोत इंटरेस्टिंग विधि आपके सामने रखूँगा। प्रकृति को बहोत अच्छे वाइब्रेशन्स देने है। इससे क्या फायदा होगा और? एक तो हमारी प्यूरिटी बढ़ेगी लेकिन एक बहोत बड़ा फायदा होंगा - विनाश काल में प्रकृति का सहयोग मिलेगा। प्रकृति हमें अपना मालिक स्वीकार करेगी। जब लोगो को पानी पिने को भी नहीं मिलेगा तब हमारी टंकियां फुल होंगी

। हम दुसरो को पिलाते रहेंगे। जब अन्न किसी को नहीं मिलेगा हमारे भण्डार भरपूर होंगे। यह बहोत फायदा होंगा, देंगे प्रकृति को वाइब्रेशन्स? देंगे ना?

पांचवी बात रखनी है जो आज के वरदान में भी आ गया जो प्यूरिटी का ही एक बहोत सुंदर स्वरुप है - **सब आत्माओ के लिए शुभ भावनाएं।** अपनों के लिए तो सभी शुभ भावना रखते है लेकिन दुसरो के लिए भी। सम्पूर्ण पवित्र आत्मा की यह पहचान है की कोई उसका शत्रु नहीं, उसके मन में किसी की लिए भी घृणा भाव नहीं, सब उसके अपने है, यह पवित्र आत्मा का लक्षण है ।

एक और अभ्यास करेंगे यह हम कमेन्ट्री से जब योग करेंगे तब भी करेंगे - में आत्मा जैसे हमने चर्चा की परम पवित्र हूँ दो संकल्प और बहोत अच्छे है जो अपने अभ्यास में आप चालू रखेंगे। यह तिन अभ्यास कभी कुछ कभी कुछ कभी कुछ। एक ही अभ्यास मनुष्य को सदा सुख नहीं देता। बोरियत होने लगती है । हा तो यह तिन अभ्यास आपके सामने है - में पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ इसमें जोड़ेंगे मेरे अंग अंग से पवित्र किरणे चारो और फ़ैल रही है तीसरा अभ्यास है बहोत पावरफुल है में पवित्रता का सूर्य हूँ।

में आत्मा पवित्रता की सूर्य हूँ। जैसे आत्मा सूरज की तरह चमक रही है इधर, जिससे बहोत तेज किरणे फ़ैल रही है। तेजस्वी किरणे, इससे अशरीरी पन के अनुभव में भी बहोत आनंद हो जायेगा। योग भी बहोत सुंदर हो जायेगा। योग बल के बिना कोई पवित्रता को अपना नहीं सकता। बाबा ने आकर हमे तिन चीजे याद दिलाई जिससे हम सब पवित्र होने लगे पहली तो यह की **तुम आत्माएं पवित्र हो मूल रूप से।** दूसरी क्या याद दिलाई? बाबा ने याद दिलाया **तुम देव कुल की महान आत्माएं हो ।** दो युग तक क्या थे हम सब? देवता थे ना? देवता माना सम्पूर्ण पवित्र । जिनके चेहरे भी चमकते रहेंगे। पीछे बाबा की मुरली में आया तुम्हारे शरीर कंचन की तरह चमकेंगे वहाँ बिलकुल निरोग काया पवित्र काया। **हम दो युग तक देवता थे। वोह देव संस्कार दो युग तक, थोड़े दिन नहीं, ढाई हज़ार साल हमने देवत्व में बिताएं है।** तो देवताई सारे संस्कार हमारे अंदर है। गुण, संस्कार, प्यूरिटी, शक्तियां सब हमारे अंदर है। उनके उपर दूसरी चीजे आ गयी है। अगर हम देवताई संस्कारों को प्रगट करना चाहते है तो हमें याद करना पड़ेगा अपना पहला जनम। इसीलिए बाबा ने कई साल से बहोत बार याद दिलाया **पांच स्वरूपों का अभ्यास** करों। यह अभ्यास योग को भी बहोत आनंदित कर देता है, एकाग्रता को भी बढ़ा देता है, प्यूरिटी को बढ़ा देता है। जो कुछ हमारे पास सतयुग में था सब इमर्ज हो जायेगा।

इसीलिए ब्रह्मा बाबा की तरेह अपने देव स्वरुप को याद किया करें। आपने सुना ही है बाबा को क्या नशा रहता था? लक्ष्मी नारायण का फोटो देख कर नशा रहता था की में यह बना। मनमोहिनी दीदी यज्ञ का सारा कार्य देखती थी तो दिन में कई बार बाबा के पास जाती थी पूछ ने कुछ। तो दीदी सुनाती थी में अचानक गयी तो बाबा बच्चे की तरह कुछ कर रहा है, दीदी ने पूछा बाबा क्या कर रहे हो? तो बाबा कहे बाबा को नशा चड़ा हुआ है में यह बुढा शरीर

छोड़ कर, जा कर विष्णु, विष्णु माना छोटा बच्चा श्री कृष्ण बनूँगा। तो वैसे ही बन गए जैसे श्री कृष्ण के चित्र में है ऐसे बन रहे थे, बिलकुल नशा।

दादी जानकी सुनाती रहती है क्लास में वोह बहोत अच्छी बात है - दिन के तिन बजे थे दादी जानकी जा रही थी अपने कमरे से तो देखा बाबा अकेला डांस कर रहा है तो पहले तो दादी ने सोचा की डिस्टर्ब क्यूँ करूँ? बाबा को करने दो डांस, फिर रहा नहीं गया तो खड़ी हो गयी देखने लगी । फिर बाबा ने उन्हें देख लिया तो कहा बच्ची बाबा को नशा चड़ा हुआ है में क्या बनने वाला हूँ। **भविष्य का नशा वर्तमान और भविष्य को एक कर देता है।** चडायें जिसको जितना नशा चड़े एक हो जायेंगे बिलकुल। शुरू में बाबा से श्री कृष्ण के साक्षात्कार क्यूँ होते थे? क्यूंकि बाबा को नशा चड गया था जैसे ही शिवबाबा आये और उन्हें बताया तुम श्री कृष्ण थे। तो नशा चड गया तो श्री कृष्ण दिखने लगा उनमें। **हमें भी जिस चीज का नशा चड जायेगा, आने वाले समय में हमसे भी वही दिखाय देगा संसार को।**

अब तो बाबा ने बन्द किया हुआ है ना, दिव्य दृष्टी की चाबी को? रख दी है थोड़े दिन के लिए फिर बाबा इसको लगाएगा। और जिस दिन बाबा ने इसको यूज़ कर दिया साक्षात्कार की धूम मचेगी। और वोह उनके द्वारा होंगे मुर्लियों में आप सुनते है जो योग युक्त होंगे। **एक होंगे साक्षात्कार करने वाले और दुसरे होंगे करने वाले।** आप करेंगे या करायेंगे? कोई सोचते होंगे दोनों काम करेंगे। साक्षात्कार से बहोत ज्यादा आनंद योग युक्त स्थिति में होंगा पर मान लो किसीने अभ्यास कर लिया में यह देवी हूँ। आपके गुजरात में बहोत देवियाँ है ना? आपके बापूनगर में जो भी देवी हो खोडियार है कौनसी है? मेलडी माता। एक मेलडी माता भी है ना बकरी जिसकी सवारी है। हमारे आबू रोड में भी एक मंदिर है। सिकोतर माँ। मान लो किसी ने अभ्यास कर लिया में ही सिकोतर माँ हूँ, तो क्या होगा? भक्तो को आपसे वही माँ दिखाई देगी। जिसने जो अभ्यास कर लिया संकल्प करते ही वोह वही स्वरुप बन जायेगा ऐसा समय आ रहा है। इसमें अब लम्बा समय नहीं है। पांच सात साल में यह खेल शुरु हो जाना चाहिए। धीरे धीरे होगा फिर बहोत बढेगा। तो हम सभी अपने देव स्वरुप को याद किया करें। **पांचो स्वरुप ही पवित्रता के है ईस्ट देव-देवी वोह भी पवित्र है, ब्राह्मण भी और फ़रिश्ता भी।** पांच स्वरूपों के अभ्यास को बहोत बढ़ाएंगे।

पवित्र आत्माओ को क्रोध मुक्त होना चाहिए या क्रोध युक्त? है? मुक्त। बहोत सारे भाई बहेने क्रोध मुक्त हो गए है, में हाथ उठवाता हूँ जहाँ-तहां बहोत उठाते है। जो बहोत ज्यादा क्रोध मुक्त हो गए है वोह हाथ उठाएं, बहोत ज्यादा। थोडा बचा है उसकी कोई बात नहीं। जो क्रोध मुक्त होना चाहते है, चाहते है सभी? एक बहोत अच्छा संकल्प सवेरे करना। यह जो में कई संकल्प आप को बता रहा हूँ यह सात सात दिन आप कर सकते है फिर दूसरा लेलो फिर तीसरा ले लो। वोह संकल्प है देखो पहले तो अपने को आत्मा देखना फिर संकल्प करना में विजयी रतन हूँ, में क्रोध मुक्त हूँ, मेरा चित्त शांत हो गया है । बिलकुल फिलिंग से करना हो गया है। यह नहीं कहना की मेरा क्रोध तो जाता ही नहीं मुझे तो बहोत क्रोध आता है। अगर आप बार यह सोचेंगे तो जायेगा नहीं। मेरा चित शांत हो गया है में विजयी रतन हूँ, क्रोध मुक्त हूँ मेरा चित शांत हो गया है सात बार बहोत अच्छा अनुभव होगा। और किसी को ज्यादा ही क्रोध आता हो कोई कोई ऐसे भी महावीर है ना? एक माता मेरे पास आई एक समस्या लेकर की हम दोनों ही ज्ञान में है

लेकिन दोनों को ही बड़ा गुस्सा आता है इतना आता है की लडाई होती है और पडोशी आके छुडाते है। कहा में इसलिए आई हूँ जब पडोशी आके छुडाते है वोह साथ में यह भी कहते है, वोह बिचारे बड़े प्यार से कहते है, की अरे भाई तुम तो ओम शांति में जाते हो लड़ा ना करो। कहा हमारा हाल बहोत बुरा हो जाता है। कहा सारा दिन ना खाना अच्छा लगता न बात करना जब वोह यह कह देते है की भाई तुम तो ओम शांति में जाते हो । अब हम क्या करें? हमें बहोत लज्जा आती है। हमें इस क्रोध से मुक्त होना है।

क्रोध का बिज कौन है? अहंकार। कोई भी अपने को कम नहीं समजता है ना? भाई सोचेगा में बहोत बुद्धिमान हूँ माता सोचेगी बुद्धिमान, तुम क्या में तुमसे ज्यादा हूँ। तुम शेर तो में सवाशेर लडाई हो जाती है। और बुद्धिमान कौन? जो अपने को बुद्धिमान ना समझे। हर बुद्धिमान सोचता है में राईट हूँ। यह गड़बड़ है यह लडाई का कारन है। **अहम् क्रोध को जनम देता है।** हो सकता है हम राईट हों फिर भी लेकिन धैर्यता होनी ही चाहिए। तो कोसिस करनी है अहम् को समाप्त करने की। और यह **अभिमान समाप्त होता है स्वमान से**। उसका दूसरा जो रूप है मैं पन वोह समाप्त होता है एक ही चीज से। इसको सबको अभ्यास करना भाई बहेने सब को। जो कुछ मेरे पास है वोह सब प्रभु देन है। बहोत सुंदर विचार है येह बाबा का दिया हुआ संकल्प है आप जानते है और येह आत्मा को निर्मल कर देता है । निर्मल। **प्योर आत्माएं निर्मल होनी चाहिए। जो कुछ मेरे पास है वोह सब प्रभु देन है** इसीलिए हमें कर्मेन्द्रियों को जितना है। येही सब्जेक्ट सब से बड़ा हो जाता है प्यूरिटी में ।

कानो का रस, आँखों का और मुख का और जीभ का चार रस विशेष हाथो का भी है लेकिन चार विशेष **जिनको खान पान में आशक्ति है वोह योगी नहीं बन सकते, जिनको व्यर्थ सुनने में रस है उनका पवित्रता का बल नष्ट होता रहता है,** जो अपनी सुंदर चीज वाचा को कितनी सुंदर चीज है ना **वाचा जो इशे नष्ट करते है बहोत बोलने में उनकी आंतरिक शक्तियां नष्ट हो जाती है** उनके बोल में प्रभाव नहीं रहता, **जो आँखों से ऐसा वैसा देखते है उनकी दृष्टी में दिव्यता नहीं रहती।** इसीलिए चिंतन करेंगे। मेने जब किया यह अभ्यास तो मेरा येह चिंतन था की **जिन आँखों से हम भगवान् को देखते है उन आँखों से न तो किसी का देह देखेंगे, न किसी के अवगुण देखेंगे दोनों ही इम्पुरिटी है ।** अवगुण देखना भी अपवित्रता है। जिन कानो से रोज भगवान् की बातें सुनते है सुनते है ना? मुरली सुनना कितना सुखदायक है ना? सब से ज्यादा सुख बाबा की मुरली से मिलता है येही तो वोह बांसुरी है ना? जिसको सुनके गोपियाँ भाग आती थी। तो जिन कानो से भगवान् के महावाक्य सुनते है उन कानो से हम व्यर्थ नहीं सुनेंगे। जो अपने को व्यर्थ सुनने से बचा सके वोह भी बहोत महान बन जाते है। और तीसरा है जो मुख भगवान् का ज्ञान अमृत देने के लिए मिला है उससे हम कटु वचन नहीं निकालेंगे। तो पवित्र आत्माओ के बोल सुखदायी होंगे। चाहे आप अपने परिवार में बोले, फ्रेंड सिर्किल में बोले, काम जहाँ करते है वहां बोले वहाँ मधुर वाणी, पवित्र वाणी आकाश वाणी बन जाती है। येह सब पवित्रता में आ जाता है।

पवित्र आत्माओ का प्रकाश इस संसार में बहोत फैलता है । मुझे तो याद है कभी बाबा ने येह सुंदर संदेश में येह कहा था तब से मुझे येह बात याद रहती है दो संदेश की बात सुना देता हूँ जिससे आपको प्यूरिटी का महत्व

बिलकुल खयालो में रहें बाबा ने कहा **जब तुम सम्पूर्ण पवित्र बन जाओगे तो इस कलयुग के अन्धकार में वैसे ही चमकोगे जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा आकाश में चमकता है।** सब के मन को खींचता है ना? पूर्णिमा के चन्द्र को देखने की इच्छा होती है देखती ही रहे। मेने एक दिन सोचा अभी नजदीक नजदीक की में अंतर देखता हूँ एक दिन पहले का चंद्रमा और एक दिन बाद का चौदस। तो दोनों में ही वोह आकर्षण नहीं था जो पूर्णिमा के चन्द्र में था हालाकि एक ही कला कम हुयी थी लेकिन आकर्षण पूरा कम हो गया था। तो मुझे बाबा की येह बात याद आई थी जब तुम सम्पूर्ण पवित्र बन जाते हो तो पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह चमकते हो।

एक और बहोत बड़ी बात आपको सुना देता हूँ ७५ राखी के त्यौहार पर बाबा का संदेश था येह आपने कहीं सुनी हो में क्लासेज में सुनाता हूँ - **आगे चल कर विनाश काल में तुम्हारे पास बीमार लोगो की भीड़ आएगी तुम एक साथ सब को दृष्टी देंगे और वोह रोग मुक्त हो जायेंगे लेकिन येह काम उनसे होगा जिनमें सम्पूर्ण पवित्रता होगी।** सम्पूर्ण पवित्रता आँखों से निकलेगी किरणे और वोह दुसरो को निरोग करेगी। तो सभी ध्यान देंगे बोल भी मर्यादित रहे, हमारा व्यवहार भी मर्यादित हो, बहोत सुंदर समय अभी चल रहा है इसमें कहीं कोई स्लीप ना हो। मुझे ऐसा दिख रहा है एक बात इशारे में आपको कहूँगा बाबा ने नहीं बताया में बता रहा हूँ केवल, थोड़ी बहोत गलत भी हो सकती है की - **कुछ समय में ब्राह्मणों में एक पतझड़ होने जा रही है समझते है ना पतझड़? कई कच्ची आत्माएं निकल जाएगी ।** क्यूंकि कोई किला कितना भी पावरफुल हो उसमें सो कच्ची ईंटे लगी हो तो किला पावरफुल नहीं माना जाता और किला छोटा ही हो लेकिन सारी ईंटे बहोत मजबूत हों वोह पावरफुल है तो समय समय पर बाबा कच्ची आत्माओ को जरा विदाई देता रहता है येह भी ड्रामा की प्लानिंग में एक प्लान है। इसीलिए अपनी प्यूरिटी को इतना स्ट्रोंग करेंगे । आप लास्ट बात बता देता हूँ आप में से कईयों ने सुनी भी होंगी - अंत में दो काम इस श्रुष्टि पे बहोत होंगे हाँ पिछले साल रिवाइज्ड अव्यक्त मुरली में आ चुकी है येह बात - **पांचो विकारो का और प्रकृति के पांचो तत्वों का अंतिम आक्रमण होंगा पावरफुल अटैक और जिसके अंदर जो विकार ज्यादा होंगा वोह उस विकार के वसीभूत होके हार खा लेगा।**

अब एक छोटी सी चीज देखो जिसके बारे में मनुष्य को बहोत कम ख्याल रहता है। किसीके अंदर लोभ है अब संसार में लोभ के वाइब्रेशन्स बढ़ गए, विकारो के अटैक होने लगे, किसीको भी लोभ हुआ सोना खरीद के रख लो । आएगा कोई सोना बेचने वाला, सोना होगा बनावटी। बताएगा सस्ता दे रहा हूँ २० किलो है २० लाख में दे देता हूँ बस ले आया हूँ कहीं से चोरी करके। आप उसके बहेकावे में आ जायेंगे क्यूंकि मन में क्या है? लोभ। उससे ले लेंगे और जब पता चलेगा येह तो कुछ और ही है अंदर में, ऐसा होता है। लोभ मनुष्य को येह हो रहा है बहोत मनुष्य के साथ ऐसे कई करोड़ रुपये ले गए है। वोह लोग असली सोना है दिखा दिया था थोडा सा चेक करा लो येह है तो असली था जरा सा बाकि सब था नकली तो करोड़ गए। धन का लोभ अब उचित नहीं। पवित्र आत्माएं माना तृप्त आत्माएं, संतुष्ट आत्माएं। नहीं तो इच्छाओ में हमारी शक्तियां चली जाती है।

इसलिए आपने जो भारत के अच्छे अच्छे धर्म है उनमें एक बात सुनी होंगी इसका संस्कृत में नाम है ए परिग्रह अर्थात इकट्ठा ना करना। कुछ भी चीज इकट्ठा ना करना क्यूंकि जितना माल हम अपने पास ज्यादा रखेंगे हमारी बुद्धि पे दबाव रहेगा। हम योग का सुख नहीं ले पायेंगे और धन सम्पदा किसी को काम नहीं आएगी। विनाशकाल ऐसा होगा आ गया है तेजी से अब कोई नहीं सोच रहा ना विनाश काल? अब आएगा विनाश। बाबा ने क्या कहा था **जब कोई नहीं सोचेगा सब मस्त हो जायेंगे विनाश बिनाश कुछ नहीं होता है येह ब्रह्माकुमारियाँ ऐसे ही बोलती है तब विनाश का समय आएगा।** लेकिन वोह एक दिन में नहीं होगा कई साल चलेगा पिसेगा मनुष्य को, तेल निकलेगा सब का इसीलिए पैसा काम नहीं आएगा। आपके पास जेब में दस हजार रुपये होंगे पिने को पानी नहीं मिलेगा, आप के बैंक में बहोत सारे बैलेंस होगा लेकिन कोई बैंक वाला देगा नहीं। येह हाल होने वाला है। काम क्या आएगा? श्रेष्ठ स्थिति। **पवित्र आत्माओ को प्रकृति सब कुछ प्रदान करेगी।**

इसीलिए अब एक ही बात कहके समाप्त करते है फिर योग करेंगे धन तो विनाशी है सब जानते है लेकिन धन को यदि पुन्य कर्मो में बदल दिया जाएँ तो पुन्य कर्म है अविनाशी। इसीलिए जिसको अपने धन को अविनाशी बनाना हो तो धन को पुन्य कर्म में बदल दो, कौनसा है सब से बड़ा पुन्य? आप जानते है। वैसे तो दुनिया में गरीबो को भोजन खिलाना मदद करना रोगियों की सेवा करना वोह पुन्य है। वोह भी है लेकिन **जब भगवान् काम कर रहा है उसको मदद करना सब से बड़ा पुन्य वही हो जाता है**। तो सभी अच्छी तरह चिंतन करेंगे और जो प्रैक्टिस मेने आपको कहीं उनको चालू रखना। रोज सवेरे दस मिनट सुंदर संकल्पों में व्यतीत करना येह बहोत बड़ी फिलोसोफी है सवेरे के दस मिनट मनुष्य के लिए वरदान होते है। **पहला संकल्प जो हम करेंगे वैसा ही हमारा जीवन होंगा।** उठते ही पहला संकल्प आपने कर लिया में बहोत धनवान हूँ तो क्या होगा? धन वृद्धि दिखाई देगी आपको कुछ दिनों में। पहला संकल्प आपने कर लिया मेरे जैसा भाग्यवान और कोई नहीं, आपको लगने लगेगा भाग्य के द्वार खुलने लगे है । आपने पहला संकल्प कर लिया मेरे जैसा खुश नशीब और कोई नहीं, ख़ुशी बढ़ने लगेगी और आपने उठते ही सोच लिया बहोत टेन्सन है इधर हाथ रख दिया बहोत समस्याएं है बाबा मदद करो तो समस्याएं बढती जायेगी बाबा मदद नहीं करेगा। मदद तो हमें स्वयं को स्वयं करनी है। इसीलिए ध्यान देंगे पहला संकल्प रोज का रोज सवेरे दस मिनट जीवन का स्वर्णकाल है।

यहाँ जो स्टूडेंट बैठे है वोह बहोत अच्छा अभ्यास किया करें में माताओ को बहोत सिखाता हूँ बच्चो से कराओ में बुद्धि मान हूँ उठते ही तिन बार बच्चो की बुद्धि का विकास होगा। में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जनम सिद्ध अधिकार है, सफलता मिलेगी। में विघन विनाशक हूँ, तो विघन नष्ट होंगे। **सवेरे दिन में करने का महत्व है लेकिन उठ्ते ही करने का बहोत महत्व है ।**

चलो **ऐसा पावरफुल योग करेंगे की प्रकृति को योग का दान मिल जाये ।**

ओम शांति।